मुक्तिपथ पर प्रथम चरण...

तीर्थधाम
ढाईद्वीप जिनायतन

आत्मा ही है शरण

जिनश्रुत फाउण्डेशन कोर्स
लेवल - 1

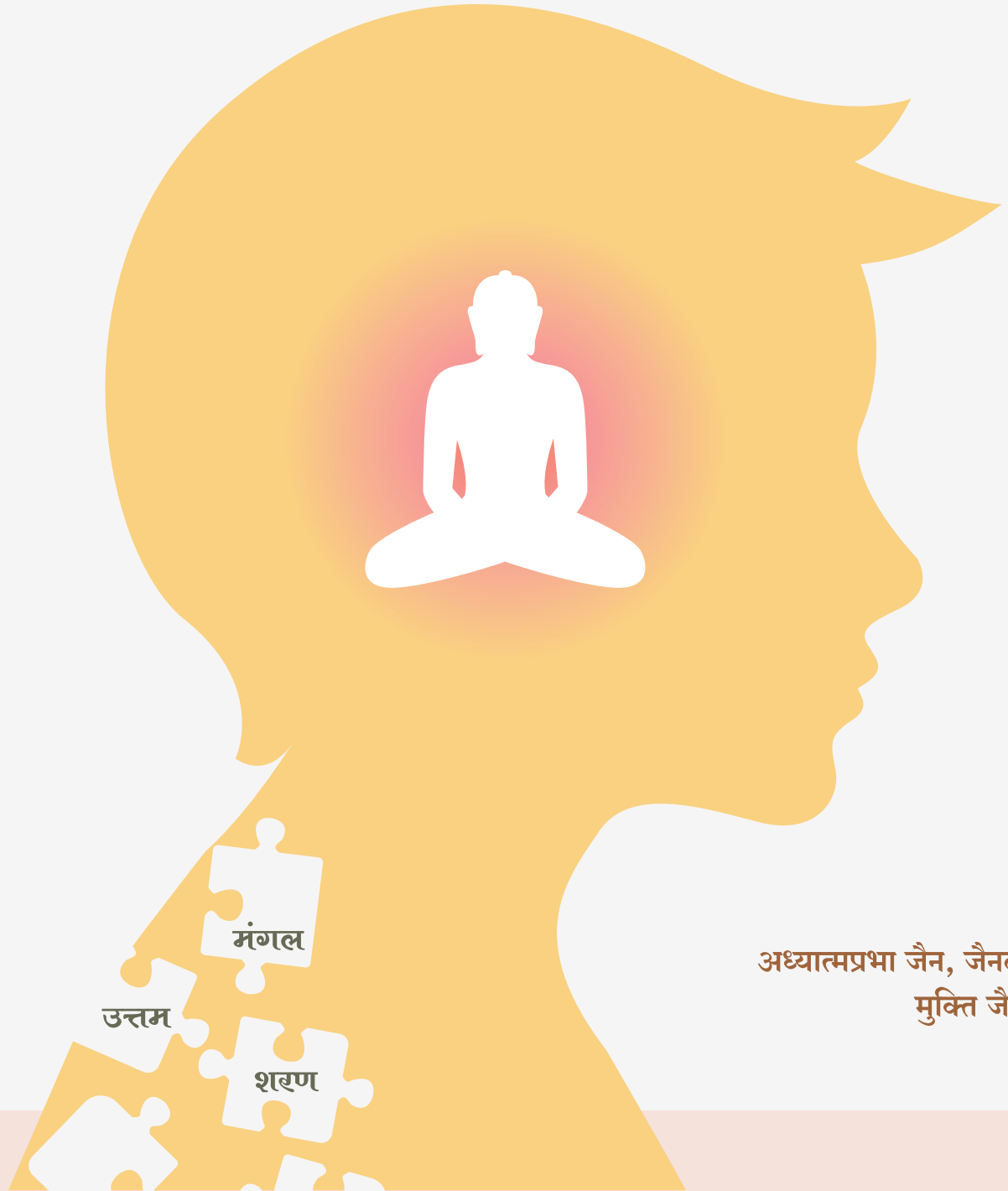

अध्यात्मप्रभा जैन, जैनदर्शनाचार्य
मुक्ति जैन, शास्त्री

लेखक की कलम से...

जिनश्रुत बाल शिविर के निमित्त से इस पाठ्यक्रम को बनाकर प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

यह पाठ्यक्रम डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा रचित बालबोध पाठमाला इत्यादि कृतियों को आधार लेकर आई.जी.सी.एस.ई. बोर्ड की शिक्षण पद्धति को अपनाते हुए बनाया गया है। इसका उद्देश्य बालकों में जैनधर्म के सिद्धांतों को इसप्रकार हृदय में उतारना है कि वे स्वयं जीवन में निर्णय कर सकें कि उन्हें किन देव-शास्त्र-गुरु की शरण में जाना है या क्यों और कैसे जैन सिद्धांतों को जीवन में उतारना है?

जैन सिद्धांत मात्र उनकी स्मृति का विषय न बनकर उनकी जीवनचर्या का विषय बने, यही प्रयास है।

यह शिक्षण पद्धति की नवीन प्रयोगविधि है, जिसमें छात्र स्वयं प्रयोगात्मक विश्लेषण करके निष्कर्ष को प्राप्त करते हैं।

यदि यह प्रयोग बाल शिविर में सफल होता है तो इसे आवश्यकतानुसार परिष्कृत और परिमार्जित करेंगे तथा साथ ही पूरे पाठ्यक्रम का भी इसी विधि से नवीनीकरण किया जाएगा।

कहानियों में डॉ. प्रवीणकुमार शास्त्री, इंदौर का सहयोग रहा।

इस पुस्तक के मुखपृष्ठ की सज्जा एवं पूरी पुस्तक की इलस्ट्रेशन में प्राजक्ता शाहा, पुणे का अमूल्य योगदान रहा है।

कृति निर्माण में पण्डित अखिल शास्त्री, मंडीदीप तथा श्री कमल शर्मा का बहुमूल्य सहयोग रहा है।

– अध्यात्मप्रभा जैन, जैनदर्शनाचार्य

मुक्ति जैन, शास्त्री

श्री कुन्दकुन्द कहान शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर
'तृतीय पुष्प'
मूल्य 25/-

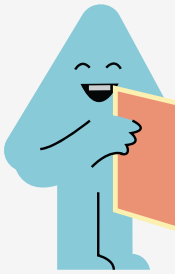

णमोकार महामंत्र

क्या सीखेंगे?

- ★ णमोकार मंत्र का अर्थ, उच्चारण
- ★ चत्तारि मंगल पाठ का अर्थ, उच्चारण
- ★ पंच परमेष्ठियों का सामान्य स्वरूप
- ★ तीर्थंकर और भगवान की समानता और अंतर
- ★ देव-दर्शन की विधि

बेटी : माँ, आप क्या कर रही हो?

माँ : प्रातःकाल उठकर सभी अपने इष्टदेव को नमस्कार करते हैं ना, मैं भी अपने इष्टदेव को नमस्कार कर रही हूँ।

बेटी : यह इष्टदेव कौन होते हैं और उन्हें क्यों याद करते हैं?

माँ : जो सब जीवों को सुखी होने का सच्चा मार्ग बताते हैं, वे ही इष्टदेव होते हैं। हमें सुखी होना है; अतः हम उन्हें याद करते हैं।

बेटी : माँ, वे इष्टदेव कौन हैं, जो हमें सच्चा मार्ग बताते हैं?

माँ : जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी अरहंत देव हैं, वे ही हमें सच्चा मार्ग बताते हैं; इसलिए हम उन्हें णमोकार मंत्र में सर्वप्रथम नमस्कार करते हैं।

बेटी : माँ, मुझे णमोकार मंत्र सिखाओ ना।

माँ : "णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं"

इन्हें पंच परमेष्ठी कहते हैं।

बेटी : परमेष्ठी का क्या अर्थ होता है माँ?

माँ : जो परमपद में स्थित हो, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं। परमपद अर्थात् श्रेष्ठ पद।

इसमें अरहंत और सिद्ध परमेष्ठी देव (भगवान) हैं तथा आचार्य, उपाध्याय और साधु हमारे गुरु हैं।

क्या आप जानते हैं?

- ये मंत्र किसी व्यक्ति को नहीं; बल्कि गुणों को नमन करता है।
- ये मंत्र अनादि-निधन है। इसे किसी ने नहीं बनाया।
- पहली बार पुष्पदंत आचार्य ने णमोकार मंत्र को षट्खंडागम ग्रंथ के मंगलाचरण के रूप में लिपिबद्ध किया था।
- इस मंत्र में कुछ भी नहीं माँगा गया।
- णमोकार मंत्र में 35 अक्षर और 58 मात्राएँ हैं।
- इसके अन्य नाम हैं –
  - ★ अपराजित मंत्र
  - ★ अनादि-निधन मंत्र
  - ★ मूलमंत्र
  - ★ महामंत्र
  - ★ नमस्कार मंत्र

मुख्य पारिभाषिक शब्द

- ★ इष्टदेव
- ★ परमेष्ठी

बेटी : क्या अरहंत सबसे बड़े भगवान हैं?

माँ : बेटी! भगवानों में छोटे-बड़े का कोई भेद नहीं होता है। सभी भगवान वीतरागी और सर्वज्ञ होते हैं; परंतु अरहंत भगवान हमें मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं, इसलिए हम उन्हें सर्वप्रथम नमस्कार करते हैं।

बेटी : पर माँ, कौन से भगवान अरहंत हैं और कौन सिद्ध - यह हम कैसे जानेंगे?

माँ : अरहंत भगवान शरीर सहित होते हैं और सिद्ध शरीर रहित होते हैं।

वीतरागी और सर्वज्ञ होने के साथ अरहंत भगवान हितोपदेशी भी होते हैं और सिद्ध भगवान हितोपदेशी नहीं होते।

अरहंत मनुष्यलोक में विराजते हैं और सिद्ध भगवान सिद्धशिला के ऊपर।

सभी अरहंत भगवान भी अंत में शरीर रहित होकर सिद्धशिला के ऊपर स्थित हो जाते हैं।

बेटी : माँ, और यह तीर्थंकर कौन होते हैं?

माँ : अरहंत भगवान ही तीर्थंकर होते हैं, जो अरहंत भगवान धर्मतीर्थ का उपदेश देते हैं, समवशरण आदि विभूतियों से युक्त होते हैं, जिनका तीर्थंकर नामकर्म के महापुण्य का उदय होता है, उन्हें तीर्थंकर कहते हैं। वे 24 होते हैं और उन्हें चिह्नों से पहचाना जाता है।

मुख्य पारिभाषिक शब्द

- ★ वीतरागी
- ★ सर्वज्ञ
- ★ हितोपदेशी

स्वयं को चुनौती दें

शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ भगवान चक्रवर्ती, कामदेव और तीर्थंकर तीनों हैं - तो क्या वे ज्यादा वंदनीय हैं?

अरहंत और सिद्ध में अन्तर

अरहंत भगवान	सिद्ध भगवान
● शरीर सहित होते हैं।	● शरीर रहित होते हैं।
● समवसरण में विराजमान होते हैं।	● सिद्धशिला के ऊपर विराजमान होते हैं।
● दिव्यध्वनि खिरती है।	● दिव्यध्वनि नहीं खिरती है।

पता लगाएँ

- ✢ 1 से अधिक नाम वाले तीर्थंकर।
- ✢ 8 अन्य वंश वाले तीर्थंकर।
- ✢ ऐसे तीर्थंकर जो अयोध्या में पैदा नहीं हुए।
- ✢ ऐसे तीर्थंकर जो शिखरजी से मोक्ष नहीं गए।

तीर्थंकर और भगवान में अन्तर

तीर्थंकर	भगवान
● दिव्यध्वनि नियम से खिरती है।	● सभी भगवानों की दिव्यध्वनि खिरने का नियम नहीं है।
● 24 होते हैं।	● अनंत होते हैं।
● कल्याणक होते हैं।	● कल्याणक नहीं होते हैं।
● समवसरण होता है।	● गंधकुटी होती है।

नई शब्दावली

- ★ सिद्धशिला - जहाँ अनंतानंत सिद्ध भगवान विराजते हैं।
- ★ समवसरण - तीर्थंकर की धर्मसभा।
- ★ धर्मतीर्थ - जो जीवों को संसार से पार उतार दे।
- ★ दिव्यध्वनि - तीर्थंकरों द्वारा प्राप्त धर्म उपदेश।
- ★ गंधकुटी - भगवान की धर्मसभा।

चौबीस तीर्थंकरों के नाम व चिन्ह

1.	श्री आदिनाथ	बैल	9.	श्री पुष्पदंत	मगर	17.	श्री कुन्थुनाथ	बकरा
2.	श्री अजितनाथ	हाथी	10.	श्री शीतलनाथ	कल्पवृक्ष	18.	श्री अरहनाथ	मछली
3.	श्री सम्भवनाथ	घोड़ा	11.	श्री श्रेयांसनाथ	गेंडा	19.	श्री मल्लिनाथ	कलश
4.	श्री अभिनन्दननाथ	बन्दर	12.	श्री वासुपूज्य	भैंसा	20.	श्री मुनिसुव्रतनाथ	कछुवा
5.	श्री सुमतिनाथ	चकवा	13.	श्री विमलनाथ	शूकर	21.	श्री नमिनाथ	नीलकमल
6.	श्री पद्मप्रभु	कमल	14.	श्री अनन्तनाथ	सेही	22.	श्री नेमिनाथ	शंख
7.	श्री सुपार्श्वनाथ	साँथिया	15.	श्री धर्मनाथ	वज्रदण्ड	23.	श्री पार्श्वनाथ	सर्प
8.	श्री चन्द्रप्रभु	चन्द्रमा	16.	श्री शान्तिनाथ	हिरण	24.	श्री महावीर	सिंह

बेटी : माँ, क्या तीर्थंकर 24 ही होते हैं?

माँ : हाँ, एक काल में 24 तीर्थंकर ही होते हैं।

बेटी : और भगवान?

माँ : भगवान तो अनंत होते हैं। सभी तीर्थंकर भगवान ही होते हैं, पर सभी भगवान तीर्थंकर नहीं होते।

बेटी : माँ, अब आचार्य, उपाध्याय और साधु भी अरिहंत और सिद्ध समान भगवान ही हैं क्या?

माँ : नहीं बेटी! वे तो हमारे समान मनुष्य ही हैं और गृहस्थ जीवन त्यागकर आत्मा साधनापूर्वक मुनि हो गए हैं।

बेटी : इन तीनों में अंतर क्या है?

माँ : देखो बेटी! सभी मुनिराज सामान्य रूप से साधु परमेष्ठी के अंतर्गत ही आते हैं। अतः आचार्य और उपाध्याय परमेष्ठी भी साधु ही हैं। अंतर सिर्फ इतना है कि जो मुनिसंघ का संचालन करते हैं, वह आचार्य कहलाते हैं और जो शास्त्र लेखन और पठन-पाठन में व्यस्त रहते हैं, उन्हें उपाध्याय कहते हैं। तीनों ही मुक्ति के मार्ग पर चलने वाले होने से परमेष्ठी में आते हैं। यह तीनों ही साधनापूर्वक अरिहंत सिद्ध बनते हैं। हम सब भी मुनिदीक्षा लेकर भगवान बन सकते हैं।

बेटी : माँ, हम उठते ही, फिर मंदिर जाकर और रात्रि में सोने से पहले यही मंत्र क्यों दोहराते हैं?

माँ : अच्छा बताओ, तुम णमोकार मन्त्र के बाद क्या बोलती हो?

आचार्य, उपाध्याय और साधु में अन्तर

- आचार्य के 36, उपाध्याय के 25 और साधु के 28 मूल गुण होते हैं।
- आचार्य संघ के प्रधान होते हैं, उपाध्याय अध्यापक होते हैं और साधु शिष्य होते हैं।

याद करें

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन
सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय
चन्द्र पहुप शीतल श्रेयांस जिन
वासुपूज्य पूजित सुखदाय।

विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल
शान्ति कुन्थु अर मल्लि मनाय
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु
वर्धमान पद शीश नवाय॥

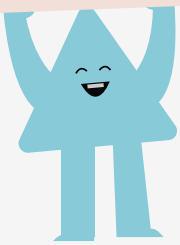

बेटी : एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढ़मं होई मंगलं।।

माँ : अर्थात् यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करनेवाला है तथा सब मंगलों में पहला मंगल है। यह मंत्र मोह-राग-द्वेष का अभाव करनेवाला और सम्यग्ज्ञान प्राप्त करानेवाला है। इसलिए हम दिन में कई बार णमोकार मंत्र का जाप करते हैं।

बेटी : तो क्या मात्र जाप से ही सारे पाप नष्ट हो जाते हैं?

माँ : जब हम पंच परमेष्ठियों का स्मरण करते हैं तब स्वतः ही सभी पापों से बच जाते हैं। पाप नष्ट होने का यही अभिप्राय है।

बेटी : माँ! मेरे अन्य मित्र तो कहते हैं कि उनके भगवान उन्हें अच्छे अंकों से पास कर देंगे। क्या मैं भी णमोकार मंत्र के जाप से अच्छे अंकों से पास हो जाऊँगी?

माँ : नहीं बेटा! भगवान कुछ कर सकते हैं, यह तो मिथ्या मान्यता है। वे तो बस जानने-देखने वाले हैं। हम तो उन जैसा बनना चाहते हैं, बस इसलिए उनके पास जाते हैं।

पता लगाएँ

- णमोकार मंत्र को एक अक्षर में कैसे बोलते हैं?
- णमोकार मंत्र को एक पंक्ति के मंत्र में कैसे बोलते हैं?
- णमोकार मंत्र 9 बार क्यों बोला जाता है?

क्रिएटिव राइटिंग

जब हम पंच परमेष्ठियों का स्मरण करते हैं तब स्वतः ही सभी पापों से बच जाते हैं।

इसको अपने जीवन के किसी उदाहरण के माध्यम से समझाइये। (जैसे - मीठा खाते वक्त गुस्सा भूल जाते हैं।)

कक्षा में चर्चा कीजिए

- क्या भगवान से सांसारिक वस्तुओं की चाह उचित है? कौनसी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना है?

- भगवान हमें कुछ ना दें, तो भी उनकी पूजा से हमें लाभ मिल सकता है न? क्या इच्छापूर्वक की गयी प्रार्थना से पापों का नाश होगा?

बेटी : तो क्या मैं भी भगवान बन सकती हूँ?

माँ : हाँ बेटी, इस जगत में जो मंगल हैं, जो श्रेष्ठ हैं, उनकी शरण में जाकर, उन जैसा बन सकते हैं। चत्तारि मंगल पाठ में बताया है ना –

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

लोक में चार मंगल हैं। अरहंत भगवान मंगल हैं, सिद्ध भगवान मंगल हैं, साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) मंगल हैं तथा केवली भगवान द्वारा बताया गया वीतराग धर्म मंगल है।

जो मोह-राग-द्वेषरूपी पापों को गलावे और सच्चा सुख उत्पन्न करे, उसे मंगल कहते हैं। अरहंतादिक स्वयं मंगलमय हैं और उनमें भक्तिभाव होने से परम मंगल होता है।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

लोक में चार उत्तम हैं। अरहंत भगवान उत्तम हैं, सिद्ध भगवान उत्तम हैं, साधु (आचार्य, उपाध्याय और साधु) उत्तम हैं तथा केवली भगवान द्वारा बताया हुआ वीतराग धर्म उत्तम है।

लोक में जो सबसे महान हो, उसे उत्तम कहते हैं। लोक में ये चारों सबसे महान हैं, अतः उत्तम हैं।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

मैं चारों की शरण में जाता हूँ। अरहंत भगवान की शरण में जाता हूँ, सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ, साधु (आचार्य, उपाध्याय, और साधु) की शरण में जाता हूँ और केवली भगवान द्वारा बताये गये वीतराग धर्म की शरण में जाता हूँ। शरण सहारे को कहते हैं। पंचपरमेष्ठी द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की शरण लेना ही पंचपरमेष्ठी की शरण है।

क्रिएटिव राइटिंग

क्या आप इस संसार में किसी को उत्तम, मंगल और शरण की श्रेणी में रख सकते हैं? कारण सहित बताइये।

मुख्य पारिभाषिक शब्द

- ★ मंगल
- ★ उत्तम
- ★ शरण

बेटी : क्या मात्र मंदिर जाने से भगवान बन जाते हैं? तो चलो, हम अभी मंदिर जाकर भगवान बन जाते हैं...

माँ : नहीं बेटा, क्या तुम्हें मंदिर जाने की विधि पता है? चलो मैं बताती हूँ।

मंदिर के भीतर चप्पल, जूते पहिने हुए नहीं जाते। मंदिर के दरवाजे पर पानी रखा रहता है। हमें चाहिए कि सबसे पहिले चप्पल-जूते खोलकर पानी से हाथ-पैर धोकर फिर भगवान की जयजयकार करते हुए तथा निःसहि निःसहि निःसहि बोलते हुए मंदिर में प्रवेश करें।

निःसहि का अर्थ है सर्व सांसारिक कार्यों का निषेध। तात्पर्य यह है कि संसार के सब कार्यों की उलझन छोड़ कर मंदिर में प्रवेश करें।

उसके बाद भगवान की वेदी के सामने ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु णमो अरहंताणं एवं चत्तारि मंगलं आदि पाठ बोलते हुए जिनेन्द्र भगवान को अष्टांग नमस्कार करें।

इसके बाद चित्त को एकाग्र करके भगवान की स्तुति पढ़ते हुए तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए। उसके बाद फिर भगवान को नमस्कार कर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ते हुए कायोत्सर्ग करना चाहिए।

केस स्टडी

दीक्षांत अपने गाँव के मेले में अपने मित्रों के साथ गया था। वहाँ खेल-कूद के साथ-साथ अनेक स्वादिष्ट व्यंजनों की भी दुकानें लगी थीं। एक खाने की दुकान पर दीक्षांत को अपने पाठशाला के कुछ मित्र आलू-कांदे की चाट खाते हुए मिल गए। दीक्षांत ने जब उन्हें कहा कि यह खाने से पाप पड़ता है, तब उसके मित्रों ने कहा कि पड़ता है तो पड़ने दो, हमें तो इन पापों को धोना आता है।

दीक्षांत कुछ समझ नहीं पाया और उसने पापों को धोने का तरीका पूछा। तब मित्रों ने कहा कि गुरुजी ने पाठशाला में बताया तो था कि णमोकार मंत्र सब पापों को गलाने वाला है।

प्रश्न : क्या आप इस व्याख्या से सहमत हैं? क्यों?

नई शब्दावली

- ★ कार्योत्सर्ग – शरीर के प्रति ममत्व का त्याग
- ★ निःसहि – समस्त सांसारिक कार्यों का निषेध करना
- ★ अष्टांग – आठ अंग सहित

उसके बाद शान्ति से बैठकर कम-से-कम आधा घंटा शास्त्र पढ़ना चाहिए। यदि मंदिर में उस समय प्रवचन होता हो, तो वह सुनना चाहिए।

जो शास्त्र में पढ़ा हो अथवा प्रवचन में सुना हो, उसे थोड़ी देर बैठकर मनन करना चाहिए तथा सोचना चाहिए कि मैं कौन हूँ ? भगवान कौन हैं ? मैं स्वयं भगवान कैसे बन सकता हूँ ? आदि-आदि। अर्थात् जो-जो क्रियाएँ स्वयं को आत्मसन्मुख करने में सहायक हों, वे सब ही मंदिर में करने योग्य हैं।

बेटी : अच्छा, तो क्या यह सब करने से भगवान बन जायेंगे?

माँ : वहाँ जाकर, भगवान का सच्चा स्वरूप समझकर, आप अपनी आत्मा को पहिचानने से भगवान बन सकते हैं।

बेटी : उनका सच्चा स्वरूप कैसे समझ आएगा?

माँ : प्रवचन सुनकर, शास्त्र स्वाध्याय कर, पंच परमेष्ठियों के गुणों का चिंतन करके ही उनका सच्चा स्वरूप समझा जा सकता है।

बेटी : माँ! अब मैं भगवान बनने के उद्देश्य से ही मंदिर जाऊँगी।

जीवन में उतारें

✢ कौन सच्चे दर्शन कर रहा है? कारण सहित बताइये।

कक्षा में चर्चा कीजिए

✢ मंदिर के अंदर क्या गतिविधियाँ करने योग्य हैं, क्या नहीं? कारण सहित बताइये।

✢ मंदिर में क्या चढ़ाने योग्य वस्तुएँ हैं?

✢ किस सिद्धांत के आधार पर यह निर्णय लिया जा सकता है कि वह कार्य मंदिर में करने के लिए उचित है या नहीं?

केस स्टडी

10 वर्षीय श्रद्धा की खेलों में बहुत रुचि है। खेलती भी अच्छा है पर उसमें एक ही कमी है कि वह अपनी हार स्वीकार नहीं कर पाती है। उसने अपने दोस्तों से सुना था कि उनके भगवान उनकी मन्नतों को पूरा कर देते हैं। अतः उसने निर्णय किया कि मेहनत के साथ-साथ वह स्पर्धा के दिन मंदिर जाकर अपने भगवान से प्रथम आने की मन्नत भी माँग लेगी। फिर तो उसे कोई हरा ही नहीं सकेगा, और यदि वह जीतेगी तो भविष्य में प्रतिदिन मंदिर जाएगी।

अपनी मेहनत और भाग्य प्रमाण वो प्रतियोगिता में प्रथम आयी, परन्तु वह स्वयं यह मानने लगी और अपने मित्रों को बताने लगी कि भगवान ने उसकी मन्नत पूरी कर दी।

प्रश्न : क्या उसके मित्रों को भी वीतरागी भगवान के समक्ष जाने से वरदान मिल जायेगा? क्यों या क्यों नहीं?

यदि ऐसा हो तो क्या-क्या दोष आएँगे?

कक्षा में चर्चा कीजिए

- स्वयं को मंदिर में क्या-क्या परिणाम आते हैं?

क्या आप जानते हैं?

मंदिर में अचित्त पदार्थ ही चढ़ाना चाहिए।

सचित्त	अचित्त
• जीव-जन्तु सहित पदार्थ सचित्त हैं।	• जीव-जन्तु रहित पदार्थ अचित्त हैं।
• फल, सब्जियाँ आदि।	• चावल, लौंग आदि।

स्वयं को चुनौती दें

घर पर बहुत बीमारियाँ और नुकसान चल रहे हैं। दादी का मन है कि कोई विधान करवाया जाए। घर पर सबने फैसला किया कि हस्तिनापुर के शांतिनाथ भगवान के मंदिर में शांति विधान करवाया जाएगा। आपको अपनी सहमति या असहमति बतानी है, और क्यों ?

णमोकार महामंत्र का इतिहास

भगवान महावीर के मोक्ष जाने के लगभग 683 वर्ष पश्चात् अर्थात् आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व तक तत्त्वपिपासु जीव जिनवाणी को मौखिक रूप से ही सुनते थे और उसे समझकर याद भी कर लेते थे। किन्तु, काल दोष से जीव की बुद्धि क्षीण होने लगी, जिससे जिनवाणी को याद रखने की क्षमता में भी कमी आ गयी।

उस काल में श्रुत के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य धरसेन को विकल्प आया कि भगवान की वाणी सुरक्षित रखने के लिए उसे लिपिबद्ध करना अनिवार्य है। अतः उन्होंने सर्वकलाओं में पारंगत दो मुनिवरों का चुनाव किया।

उनकी परीक्षा लेने की दृष्टि से एक को अधिकाक्षरी और एक को हीनाक्षरी मन्त्रविद्या देकर उन्हें षष्ठोपवास से सिद्ध करने को कहा।

गुरु की आज्ञानुसार उन्होंने वैसा ही किया और विद्याएँ सिद्ध हो गईं, किन्तु वहाँ एक बड़े-बड़े दाँतों वाली और दूसरी कानि (एक आँख वाली) देवी प्रगट हुई। उन्हें देखकर विवेकी मुनियों ने जान लिया कि मंत्रों में कुछ त्रुटि है - ऐसा विचार कर मंत्रों को सुधार कर पुनः साधना की, जिससे देवियाँ अपने स्वाभाविक सौम्यरूप में प्रगट हुईं।

दोनों मुनियों ने गुरु के पास जाकर इस घटना का उल्लेख किया। उनकी इस कुशलता से गुरु ने उन्हें योग्य पात्र समझ कर सिद्धांत ग्रन्थों का ज्ञान दिया।

इन पुष्पदंत व भूतबलि आचार्यों ने मिलकर ही 'श्री षट्खण्डागम' ग्रन्थ की रचना की। यह वही ग्रन्थ है, जिसमें इस काल में अनादिनिधन होते हुए भी प्रथम बार णमोकार महामंत्र प्राकृत भाषा में लिखा गया।

इस ग्रन्थ की रचना ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन पूर्ण हुई। तभी से यह दिन श्रुतपंचमी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

स्व-मूल्यांकन

कितना समझ आया -

	विषय	पूरा समझ आया	थोड़ा समझ आया	कुछ समझ नहीं आया
1.	णमोकार महामंत्र	○	○	○
2.	चत्तारि मंगल पाठ	○	○	○
3.	पंचपरमेष्ठी का सामान्य स्वरूप	○	○	○
4.	तीर्थंकर और भगवान में अन्तर	○	○	○
5.	देवदर्शन की विधि	○	○	○

जीव, इन्द्रियाँ और गतियाँ

क्या सीखेंगे?

- ★ मैं कौन हूँ?
- ★ जीव-अजीव में अंतर?
- ★ इंद्रियाँ और उनके भेद-प्रभेद?
- ★ चारों गतियों का स्वरूप?

क्या आप जानते हैं?

ज्ञान-दर्शन के साथ प्रत्येक जीव में सुख, वीर्य आदि अनन्त गुण भी होते हैं।

कक्षा में चर्चा कीजिए

- ✢ कम्प्यूटर आदि ज्ञान सहित होने पर भी जीव क्यों नहीं हैं?

- ✢ सुख-दुःख की अनुभूति के उदाहरण दीजिए।

मुख्य पारिभाषिक शब्द

- ★ जीव
- ★ अजीव

सुबह उठते से ही हमारे प्रत्येक कार्य का एकमात्र लक्ष्य सुखी होना होता है। अब वह चाहे खाना हो, खेलना हो, अभ्यास करना हो या पुनः रात्रि में थक कर सो जाना हो। परन्तु क्या इन प्रयासों से हम सुखी हो जाते हैं? वस्तुतः यह सब कार्य इन्द्रियजनित सुख देनेवाले होने से मात्र चारों गतियों के परिभ्रमण के ही कारण बनते हैं। तो सच्चा सुख कैसे प्राप्त हो? यह जानने के लिए सर्वप्रथम जानना होगा - मैं कौन हूँ? और मेरे दुःख का कारण क्या है?

हम इस संसार में दिखने वाले समस्त पदार्थों को जीव व अजीव, इन दो भागों में बाँट सकते हैं।

जीव और अजीव में अन्तर

जीव	अजीव
● जो ज्ञाता-दृष्टा है, वही जीव है। हम-तुम जानते हैं, हममें ज्ञान है और हम सुख-दुःख का अनुभव करते हैं, इसलिए जीव हैं।	● जिसमें ज्ञान नहीं है, जो सुख-दुःख का अनुभव नहीं करता, वह अजीव है। जैसे टेबल, कुर्सी आदि।
● मनुष्य, पेड़, पौधे, पशु-पक्षी।	● घर, टेबल, शरीर।

यद्यपि आँखें देखती हैं, कान सुनते हैं और शरीर में सुख-दुःख का अनुभव होता है, तथापि हमारा शरीर अजीव है और इसमें रहने वाली आत्मा जीव है।

यदि आँखें देखती हों, कान सुनते हों और शरीर सुख-दुःख का अनुभव करता हो, तो जब शरीर में से आत्मा निकल जाती है तो मुर्दे को भी देखना-सुनना चाहिए, सुख-दुःख का अनुभव करना चाहिए। अतः मानना होगा कि देखने-सुनने और सुख-दुःख का अनुभव करने वाला, इससे अलग कोई जीव है। इससे यह सिद्ध हुआ कि -

मैं जीव हूँ, शरीर अजीव है।
मुझमें ज्ञान है, शरीर में ज्ञान नहीं है।
मैं सुख-दुःख का अनुभव करता हूँ।
शरीर सुख-दुःख का अनुभव नहीं करता।

इसप्रकार 'मैं ज्ञान-स्वभावी आत्मा हूँ', पर शरीर व इन्द्रियों को अपना मानकर, 'शरीर ही मैं हूँ' - ऐसा मानकर इन्द्रियों के अधीन हो जाता हूँ।

शरीर और आत्मा की भिन्नता समझने के लिए हमें इन्द्रियों का स्वरूप समझना होगा।

जो शरीर के चिन्ह आत्मा को ज्ञान कराने में सहायक हैं वे ही इन्द्रियाँ हैं।

ये इन्द्रियाँ 5 प्रकार की हैं - 1. स्पर्शन, 2. रसना, 3. घ्राण, 4. चक्षु और 5. कर्ण।

स्पर्शन

रसना

घ्राण

चक्षु

कर्ण

वस्तुतः हम इन इन्द्रियों के माध्यम से ही पर-पदार्थों को जानते हैं अतः हमें यह भ्रम उत्पन्न हो जाता है कि यदि ये इन्द्रियाँ नहीं होंगी, तो हम जानेंगे कैसे? आत्मा और इन्द्रियाँ हमें एकमेक दिखती हैं, क्योंकि आत्मा और शरीर में एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध है। अतः भिन्न-भिन्न जानना कठिन है।

जैसे आँखों के रेटिना में जानने की शक्ति शेष है तो चश्मे से देखा जा सकता है। चश्मा स्वयं नहीं देखता है, देखती तो आँखें ही हैं। इसी प्रकार पाँचों इन्द्रियाँ स्वयं नहीं जानती-देखती हैं; अपितु शरीर में रहने वाली आत्मा अर्थात् मैं जानता-देखता हूँ।

इसप्रकार इन्द्रियाँ परपदार्थों के ज्ञान में निमित्त मात्र हैं, जानती तो आत्मा ही है।

हम स्पर्शन इन्द्रिय से स्पर्श का, रसना इन्द्रिय से रस का, घ्राण इन्द्रिय से गंध का, चक्षु इन्द्रिय से वर्ण का और कर्ण इन्द्रिय से शब्द का ज्ञान करते हैं। यह सब पुद्गल के लक्षण होने से यह सिद्ध होता है कि ये इन्द्रिय मात्र पुद्गल के ज्ञान में ही निमित्त हैं।

इन्द्रियाँ पर के ज्ञान में सहायक होने के साथ-साथ जीव को विषय-भोगों में उलझाने में भी निमित्त हैं। जैसे - स्पर्शन इन्द्रिय को ठंडी-ठंडी हवा चाहिए और रसना को अलग-अलग प्रकार का स्वाद। अतः आत्मा के ज्ञान में सहायक नहीं होने से और विषय-भोगों में उलझाने वाली होने से इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ है, त्यागने योग्य है।

आत्मा का हित तो आत्मा के जानने में है अतः अतीन्द्रिय ज्ञान ही उपादेय है।

सारांश

- संसारी आत्मा को ज्ञान इन्द्रियों (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण) के माध्यम से ही होता है।
- ये इन्द्रियाँ मात्र पुद्गल को ही जानने में निमित्त हैं वस्तुतः जानता तो आत्मा ही है।
- इन्द्रिय ज्ञान आत्मा को विषय-भोगों में उलझाता है और आत्मज्ञान में सहायक नहीं है।
- अतः इन्द्रिय ज्ञान तुच्छ है और छोड़ने योग्य है, अतीन्द्रिय ज्ञान ही उपादेय है।

नई शब्दावली

- निमित्त - कार्य की उत्पत्ति में सहायक कारण
- पुद्गल - स्पर्श, रस, गंध, वर्ण वाला द्रव्य
- इन्द्रिय - जीव को ज्ञान में सहायक शरीर के चिह्न
- एकक्षेत्रावगाह सम्बन्ध - एक स्थान पर दो द्रव्यों का रहना
- अतीन्द्रिय ज्ञान - इन्द्रियों से रहित होने वाला आत्मा का ज्ञान

पाँचों इन्द्रियों के विषय

स्पर्शन	रसना	घ्राण	चक्षु	कर्ण
8	5	2	5	
हल्का	खट्टा	सुगन्ध	काला	
भारी	मीठा	दुर्गन्ध	नीला	
रूखा	कड़वा		पीला	
चिकना	कषायला		लाल	
कड़ा	चरपरा		सफेद	
नरम				
ठंडा				
गर्म				

कक्षा में चर्चा

प्रतिदिन की हिंसा से बचने के लिए पाँचों इंद्रियों का ज्ञान क्यों आवश्यक है?

क्या आप जानते हैं?

- एक-इन्द्रिय से चार-इन्द्रिय तक के सभी जीव असंज्ञी होते हैं।
- पंच-इंद्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं - संज्ञी और असंज्ञी।
- मन सहित जीव को संज्ञी कहते हैं और मन रहित जीव को असंज्ञी कहते हैं।

ऐसा होता तो

- यदि इंद्रियों से ही ज्ञान होता तो क्या-क्या होता?

यदि जीव इन्द्रियों रूप शरीर और आत्मा में भेदज्ञान नहीं कर पाता है और विषय-भोगों में उलझ जाता है, तो चारों गतियों के चक्कर में पड़कर संसार के दु:खों को भोगता है।

वे चार गतियाँ हैं - मनुष्य, तिर्यंच, नरक और देव गति ।

जीव की अवस्था-विशेष को गति कहते हैं। अर्थात् जब जीव कहीं से मरकर अन्य शरीर को धारण करता है तब उसने कैसा शरीर धारण किया है, उसके अनुसार गति मानी जाती है। जैस - जल तो जल है, पर हम अवस्था विशेष के अनुसार उसे कुएँ का जल, समुद्र का जल, घड़े का जल आदि कहते हैं।

मनुष्य गति - जब कोई जीव कहीं से मरकर मनुष्य शरीर धारण करता है, उसे मनुष्य गति कहते हैं। मनुष्य गति के जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय होते हैं।

तिर्यंच गति - जब कोई जीव मरकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, कीड़े-मकोड़े, हाथी, घोड़े, कबूतर, मोर आदि पशु-पक्षी में जन्म लेता है; वह तिर्यंच गति है। इनमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पतिकायिक जीव एक-इंद्रिय जीव होते हैं।

ये एक-इन्द्रिय से लेकर संज्ञी-पंचेन्द्रिय तक के सभी जीव पशु-पक्षी तिर्यंच गति के जीव हैं।

जलकायिक

अग्निकायिक

वायुकायिक

पृथ्वीकायिक

वनस्पतिकायिक

नरक गति - जब कोई जीव कहीं से मरकर नारकी होता है, तो उसे नरक गति कहते हैं। इस पृथ्वी के नीचे सात नरक हैं। वहाँ का वातावरण बहुत ही कष्टप्रद है। वहाँ पर कहीं शरीर को जला देने वाली भयंकर गर्मी और कहीं शरीर को गला देने वाली भयंकर सर्दी पड़ती है। वहाँ भोजन-पानी का सर्वथा अभाव है। वहाँ जीव को भयंकर भूख-प्यास की वेदना सहनी पड़ती है। वहाँ सदा मारकाट मची रहती है। नारकी जीव भी संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं।

देव गति - जब कोई जीव कहीं से मरकर देव होता है तो उसे देव गति कहते हैं। जिस प्रकार पाप का फल भोगने का स्थान नरक है उसी प्रकार पुण्य का फल भोगने का स्थान देव गति (स्वर्ग) है। देव गति में मुख्यतः भोग-सामग्री प्राप्त होती है। जो जीव मरकर देवों में जन्म लेते हैं, उन्हें देव गति का जीव कहते हैं। देव गति के जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं।

नई शब्दावली

- ★ भेदज्ञान - आत्मा को परपदार्थों से भिन्न जानना
- ★ संज्ञी पंचेन्द्रिय - पाँचों इन्द्रियों और मन सहित जीव

इन चारों गतियों का वर्णन पढ़कर हमें ऐसा लगता है कि नरक गति दुःखरूप है, तिर्यंच गति भी दुःखरूप है अतः हमें तो देव गति ही जाना है; पर ऐसा सोचते हुए हम भूल जाते हैं कि नरक की तरह देव गति भी संसार में ही है और सारा संसार दुःखरूप ही है। बस कहीं कम और कहीं ज्यादा दुःख है। अतः कोई भी गति सुखरूप नहीं है।

यद्यपि मनुष्य गति से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, तथापि मनुष्य गति भी संसार में ही है और यदि मनुष्य गति सुखरूप होती, तो सिद्ध जीव इसका परित्याग क्यों करते? मनुष्य गति यद्यपि बहुत दुर्लभ है, तथापि दुखरूप ही है।

एकमात्र पूर्ण आनंदमय पंचमगति सिद्धगति ही है।

यदि हमें चारों गतियों के दुःखों से छुटकारा प्राप्त करना है और अनन्त सुखी होना है तो हमें जीव-अजीव की पहिचान कर पाँचों इन्द्रियों के विषय-भोगों को त्यागकर और शरीर से अपनापन छोड़कर 'ज्ञानस्वभावी आत्मा ही मैं हूँ' ऐसा स्वीकार करके अपनी आत्मा का आश्रय लेना चाहिए।

क्या आप जानते हैं?

- चारों गतियों के जीव समान हैं। कोई छोटे-बड़े नहीं हैं। अरिहंत और सिद्ध भी जीव ही हैं।
- अरिहंत-सिद्ध पहले हमारे जैसे संसारी ही थे।
- अग्नि का अग्निकायिक जीव होने से मंदिर में प्रयोग निषिद्ध है।
- पानी जलकायिक जीव है अतः पानी का कम-से-कम प्रयोग कर मंदिर की शुद्धि की जाती है।

क्रिएटिव राइटिंग

- चारों गतियाँ दुःखमय हैं, कारण सहित बताइए।
- क्या यह पाठ पढ़कर 'मैं कौन हूँ' यह निर्णय करने में सहायता मिली और कैसे?
- प्रतिदिन की हिंसा से बचने के लिए गतियों का ज्ञान क्यों आवश्यक है?

जीवन में उतारें

- चारों गतियों का स्वरूप जानने के बाद आप अपना जीवन कैसा बनाना चाहेंगे?

_____

_____

_____

पता लगाएँ

- ★ हमें जमीकंद क्यों नहीं खाना चाहिए?
- ★ पंचम गति से क्या तात्पर्य है?

कक्षा में चर्चा कीजिए

- एक इंद्रिय जीव (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पतिकायिक) भी जीव हैं, उन्हें तर्क द्वारा सिद्ध कीजिए।

_____

_____

_____

केस स्टडी

शेर बना महावीर

एक घने जंगल में एक शेर रहता था। वह प्रतिदिन कमजोर प्राणियों को मार-मार कर खाया करता था। एक दिन उसे एक हिरण दिखा और शेर उसके पीछे दौड़ा। शेर से कौन बच सकता था; उसने हिरण को अपने पंजों से पकड़ ही लिया और उसे मारकर खाने की तैयारी में ही था कि इतने में आकाशमार्ग से अमितकीर्ति व अमितप्रभ दो मुनिराज शेर के निकट आ गए।

मुनिराज को देखकर शेर के परिणाम एकदम शांत हो गए। वह उन दोनों को शांत भाव से देखता ही रह गया। मुनिराजों ने शेर को इन्द्रिय सुखवश प्राणियों को कष्ट देने से मना किया और मोक्ष अर्थात् पंचम गति को प्राप्त करने का उपदेश दिया। अपने दिव्यज्ञान से यह भी बताया कि यह शेर तो भविष्य का चौबीसवाँ तीर्थंकर महावीर बनने वाला है।

यह सब जानकर शेर ने मुनियों के उपदेश से भेद-विज्ञान द्वारा सम्यग्दर्शन प्राप्त किया। उसने मांसाहार का त्याग कर दिया और सूखी पत्तियाँ खा कर जीवन व्यतीत करने लगा। कुछ समय पश्चात् विशुद्ध परिणामों से मरकर वह सौधर्म स्वर्ग में सिंहकेतु नाम का देव हुआ। उसके पश्चात् वर्धमान नामक मनुष्य होकर वही जीव भगवान महावीर बने।

प्रश्न 1. इस कहानी में कितने जीव हैं? नाम सहित बताइये।

प्रश्न 2. शेर कौनसी इन्द्रिय के सुख हेतु हिंसा कर रहा था?

प्रश्न 3. शेर के जीव ने इस कहानी के अनुसार कौन-कौनसी गतियों में परिभ्रमण किया?

स्व मूल्यांकन कितना समझ आया –

	विषय	पूरा समझ आया	थोड़ा समझ आया	कुछ समझ नहीं आया
1.	मैं कौन हूँ?	○	○	○
2.	जीव-अजीव में अंतर	○	○	○
3.	इंद्रिय और उनके भेद-प्रभेद	○	○	○
4.	चारों गतियों का स्वरूप	○	○	○

छहढाला

चारों गतियों के दुःख

तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा।
काल अनन्त निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्रिय तन धार।।

एक श्वास में अठ-दश बार, जन्म्यो-मर्‌यो भर्‌यो दुखभार।
निकसि भूमि जल पावक भयो, पवन प्रत्येक वनस्पति थयो।।

दुर्लभ लहि ज्यौं चिंतामणी, त्यौं पर्याय लही त्रसतणी।
लट पिपील अलि आदि शरीर, धर-धर मर्‌यो सही बहु पीर।।

कबहूँ पंचेन्द्रिय पशु भयो, मन बिन निपट अज्ञानी थयो।
सिंहादिक सैनी ह्वै क्रूर, निबल पशु हति खाये भूर।।

कबहूँ आप भयो बलहीन, सबलनि करि खायो अति दीन।
छेदन-भेदन भूख पियास, भार-वहन हिम-आतप त्रास।।

बध-बन्धन आदिक दुःख घने, कोटि जीभतैं जात न भने।
अति संक्लेश भावतैं मर्‌यो घोर श्वभ्र-सागर में पर्‌यो।।

तहाँ भूमि परसत दुःख इसो, बिच्छू सहस डसैं नहिं तिसो।
तहाँ राध-शोणित वाहिनी, कृमि-कुल कलित देह दाहिनी।।

सेमर तरु दल जुत असिपत्र, असि ज्यौं देह विदारैं तत्र।
मेरु-समान लोह गलि जाय, ऐसी शीत उष्णता थाय।।

तिल-तिल करैं देह के खण्ड, असुर भिड़ावैं दुष्ट प्रचण्ड।
सिंधु-नीर तैं प्यास न जाय, तो पण एक न बूँद लहाय।।

तीन लोक को नाज जु खाय, मिटै न भूख कणा न लहाय।
ये दुःख बहु सागर लौं सहे, करम-जोग तैं नरगति लहै।।

जननी उदर बस्यो नव मास, अंग-सकुचतैं पायो त्रास।
निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।।

बालपने में ज्ञान न लह्यौ, तरुण समय तरुणीरत-रह्यौ।
अर्द्धमृतक-सम बूढ़ापनो, कैसे रूप लखै आपनो।।

कभी अकाम-निर्जरा करै, भवनत्रिक में सुरतन धरै।
विषयचाह-दावानल दह्यो, मरत विलाप करत दुख सह्यो।।

जो विमानवासी हू थाय, सम्यग्दर्शन बिन दुख पाय।
तहँ तैं चय थावर-तन धरै, यों परिवर्तन पूरे करै।।

मेरा धाम

शुद्धातम है मेरा नाम,
मात्र जानना मेरा काम।
मुक्तिपुरी है मेरा धाम,
मिलता जहाँ पूर्ण विश्राम।।

जहाँ भूख का नाम नहीं है,
जहाँ प्यास का काम नहीं है।
खाँसी और जुकाम नहीं है,
आधि-व्याधि का नाम नहीं है।।

सत् शिव सुन्दर मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।
मात्र जानना मेरा काम।।

स्वपर भेद-विज्ञान करेंगे,
निज आतम का ध्यान धरेंगे।
राग-द्वेष का त्याग करेंगे,
चिदानन्द रस पान करेंगे।।

सब सुखदाता मेरा धाम,
शुद्धातम है मेरा नाम।
मात्र जानना मेरा काम।।

आत्मा ही है शरण

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन का परिचय

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन विश्व की एक अद्भुत, मनोहारी व दर्शनीय रचना है। यह भारतदेश के सबसे स्वच्छ शहर व वाणिज्यिक नगरी नाम से प्रसिद्ध इन्दौर मध्यप्रदेश में स्थित है। यह रचना कृत्रिम होते हुए भी जिनागम में वर्णित अकृत्रिम ढाईद्वीप की ही प्रतिकृति है।

जिस प्रकार शास्त्रों में मध्यलोक में बीचोंबीच सर्वप्रथम जम्बूद्वीप; फिर लवण समुद्र, धातकीखण्ड द्वीप, कालोद समुद्र व पुष्करांध द्वीप स्थित हैं। उनमें पंचमेरु की रचना है, अनेकविध पर्वत, क्षेत्र, नदियाँ व अकृत्रिम चैत्यालय हैं; उनका जैसा आकार, रंग आदि का वर्णन किया गया है; उसीप्रकार इस कृत्रिम रचना में भी यथावत् चित्रण किया गया है।

इस कृत्रिम ढाईद्वीप का बाह्यरूप तो सुंदर है ही; साथ ही इसके अंदर चर्मचक्षुओं को आकर्षित करने वाले वीतराग छवियुक्त भव्य जिनबिंब विराजमान हैं। इनमें मध्यलोक के ढाईद्वीप संबंधी **398**, पाँच भरत व पाँच ऐरावत क्षेत्र की त्रिकाल चौबीसी के **720**, विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमान बीस तीर्थंकर दो स्थानों पर होने से **40** तथा इनके साथ अतिरिक्त **6** जिनबिंब और होने से कुल **1165** भगवन्तों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित होकर शोभायमान हैं।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के पुण्य प्रभावना योग में मुमुक्षु समाज में अनेकविध संकुलों का निर्माण हुआ है, उनमें यह ढाईद्वीप जिनायतन अपना एक अलग ही स्थान रखता है।

लगभग डेढ़ एकड़ में फैले इस संकुल में ऊपर **18** हजार स्क्वायर फीट का विशाल ढाईद्वीप जिन मंदिर है। नीचे का सम्पूर्ण परिसर **36** हजार स्क्वायर फीट है; जिसमें विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनालय हैं, जहाँ विश्व की सबसे ऊँची **31** इंच की स्फटिक मणि की श्री सीमंधर स्वामी, स्वर्णमय श्री आदिनाथ भगवान तथा रजतमय श्री महावीर भगवान की प्रतिमाएँ हैं।

इसी विशाल प्रांगण में **13** हजार स्क्वायर फीट का स्वाध्याय भवन है। वहीं पूज्य गुरुदेवश्री का चित्रालय व विशाल ऑडिटोरियम है। इतना ही नहीं, यहाँ **56** कमरों का आधुनिक सुसज्जित अतिथि भवन तथा **24** वन बीएचके फ्लैट्स का विद्वत् निवास भी है।

इनके अतिरिक्त **24** कमरों का एक छात्रावास है, जिसमें इस वर्ष **58** छात्र कक्षा **8**वीं और **9**वीं में अध्ययनरत हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए **5400** स्क्वायर फीट की विशाल भोजनशाला व **17** कमरों का स्टाफ क्वार्टर है।

प्रकृति के निकट और गोम्मटगिरि की तलहटी में हातोद रोड पर स्थित यह विशाल प्रांगण इन्दौरवासियों के लिए गौरव का प्रतीक व सम्पूर्ण जैन समाज के लिए दर्शनीय स्थल है। यह एयरपोर्ट से मात्र **3** किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।